भारतीय विद्यालय, डारसेट

पतझर में टूटे पत्ते

प्रश्नोत्तर - कार्यपत्रिका

कार्यपत्रिका : **नामः ----------**

शिक्षिका - बीना स्टीफन **कक्षा - X B**

दिनांक : ----------

	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए।	
प्र 1.	शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?	2
उ.	शुद्ध आदर्श में किसी प्रकार का समझौता नहीं होता। वह पूर्णतः शुद्ध होता है। इसलिए उसे सोना कहा गया है। व्यावहारिकता के नाम पर आदर्शों से समझौता किया जाता है। उसमें खोट होता है। अतः उसे ताँबा कहा गया है।	
प्र 2.	चाज़ीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?	1
उ.	चाज़ीन ने अतिथियों का स्वागत, अँगीठी सुलगाना, उस पर चायदानी रखना, चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से साफ़ करना आदि क्रियाएँ बहुत ही गरिमापूर्ण ढ़ंग से कीं।	
प्र 3.	टी-सेरेमनी में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था? और क्यों?	1
उ.	टी-सेरेमनी में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता है क्यों कि इस सेरेमी में शांति का बहुत महत्व होता है, इसलिए अधिक लोगों को वहाँ प्रवेश नहीं दिया जाता।	
प्र 4.	चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?	2
उ.	चाय पीने के बाद लेखक ने अनुभव किया कि मानो उसके दिमाग की गति मंद हो गई हो। धीरे-धीरे यह दिमाग चलना बंद हो गया। तब उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। वर्तमान काल अनंतकाल जैसा लंबा प्रतीत होने लगा	
	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में लिखिए।	
प्र 1.	गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी, उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।	5
उ.	गांधीजी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने कभी आदर्शों को व्यवहार में लाने के नाम पर गिराने की कोशिश नहीं की। उन्होंने मानव व्यवहार को आदर्श बनाने की कोशिश की।उन्होंने न तो स्वयं कभी कोई स्वार्थ सिद्ध किया, न ही दूसरों को इसके लिए प्रेरित किया। वे स्वयं सत्य और अहिंसा के फत पर चले, इसलिए उनके संपर्क में आए। अन्य लोग भी सत्य और अहिंसा के पथ पर सत्याग्रह अपनाने को तैयार हो गए। इस विलक्षण आदर्शवाद से उन्होंने देशवासियों के अपने पीछे लगा लिया।	
प्र 2.	आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं वर्तमान समय में इन मूल्यों की	5

	प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।	
उ.	मेरे विचाक में सत्य, अहिंसा. समता, विश्वबंधुता आदि मूल्य शाश्वत हैं। वर्तमान समय में सत्य की बजाय असत्य का बोलबाला है। अहिंसा की जगह हुंसा का दबदबा है। समता की जगह भेदभावों के तूल दी जा रही है। आरक्षण और जोतिवाद की भावनाएँ प्रबल हैं। विश्वबंधुता की बजाय सारे संसार को अपनी मुट्ठी में कैद करने की क्षुद्र भावना प्रबल है। अतः आज सत्य, अहिंसा, समता और विश्वबंधुता की अधिक आवश्यकता है, ताकि एक समरस और स्वस्थ समाज की स्थापना हो सके।	
प्र 4.	शुद्ध सोने में ताँबें की मिलावट या ताँबें में सोना, गाँधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है ?स्पष्ट कीजिए।	5
उ.	गाँधीजी आदर्शवादी थे। वे अपने व्यवहार को आदर्श के समान ऊँचा बनाते थे। दूसरे शब्दों में, वे ताँबें में सोना मिलाते थे। वे अपने आदर्शों को व्यवहारिक बनाने के नाम पर उन्हें नीचे नहीं गिराते थे। दूसरे शब्दों में, वे सोने में ताँबा नहीं मिलाते थे। उनकी गति नीचे से ऊपर उठने की और थी, ऊपर से नीचे गिरने की ओर नहीं।	
प्र 5.	गिरगिट कहानी में समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश गिन्नी का सोना के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि आदर्शवादिता और व्यावहारिकता इनमें से जीवन में किसका महत्व है?	3
उ.	जीवन में महत्व है आदर्शवाद का। हर मनुष्य को चाहिए कि वह अपने आदर्शों के डिगे बिना अपने व्यवहार को लचीचा अवश्य बनाए किंतु किसी भी सूरत में अपने आदर्शों को न छोड़े।	
प्र 6.	लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?	5
उ.	लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के निम्नलिखित कारण बतलाइए– • जापान के लोग प्रगति में अमरीका से होड़ करते हैं। • वे एक महीने का काम एक ही दिन में करना चाहते हैं। • वे पहले से तेज चलने वाले दिमाग को और अधिक तेज गति से चलाना चाहते हैं। मैं इन सब कारणों से सहमत हूँ। अत्यधिक हाय–तौबा से मनुष्य का मानसिक संतुलन बिगड़ता है। यह स्वाभाविक है।	
प्र 7.	लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा स्पष्ट कीजिए।	5
उ.	लेखक के अनुसार, मनुष्य बीती हुई यादों में जीकर तनाव में रहता है। परंतु वे क्षण तो बीत चुके होते हैं। इसी प्रकार वह जिन सपनों में जीता है, वे भी सच नहीं होते। केवल वर्तमान में जिएँ तो हम हायतौबा नहीं मचाएँगे। बेकार की भागदौड़ नहीं करेंगे। तब हमारा हर काम गरिमापूर्ण होगा।	

	निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए।	
1.	समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।	3
उ.	समाज में अहिंसा, सत्य, समानता, बंधुता, त्याग जैसे कुछ शाश्वत मूल्य अभी भी बचे हुए हैं। ये मूल्य आदर्शवादी लोगों के कारण बचे हुए हैं। इन्होंने अपने व्यवहार से अहिंसा, सत्य, समानता, बंधुता और त्यग का सौंदर्य प्रकट करके दिखाया। तभी लोग आज भी इनका महत्व समझते हैं।	
2.	जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।	3
उ.	जब आदर्श और व्यवहार में से लोग आदर्शों की बात करना भूल जाते हैं और व्यावहारिक होने को महत्व देने वगते हैं तो उनका व्यवहार धीरे-धीरे पतन की ओर गिरने लगता है। समझौतों की चर्चा अधिक होने लगती है। लोगों का ध्यान आदर्शों को छोड़ने की ओर लगा रहती है। इस प्रकार पतन के रास्ते खुल जाते हैं।	
3.	हमारे जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।	3
उ.	जापानी लोगों के जीवन की गति बहुत तेज़ हो गई है। वे सामान्य ढंग से गरिमापूर्वक चलने के बजाय, बेतहाशा भागते हैं ताकि अधिक काम कर सके। वे स्वाभाविक रूप से बोलने की बजाय आवेश में आकर बकते हैं। उनके पास स्वाभाविक रूप से बोलने का समय नहीं होते। उनके जीवन के तनाव, निराशाएँ और कुंठाएँ उन्हें हिलाकर रख देती है। अतः वे एकांत में भी बड़बड़ाते रहते है। आशय यह है कि वे तनाव से भरपूर जीवन जीते हैं।	
4.	सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढ़ंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।	3
उ.	टी-सेरेमनी में चाजीन ने लेखक और उसके मित्र का स्वागत,, अँगीठी जलाना, चायदानी रखना , बर्तन लाना, उन्हें पोंछना आदि कार्य इतने गरिमापूर्ण ढंग से किए कि मानो उसके एक-एक काम से संगीत का कोई उल्लासपूर्ण राग निकल रह हो। उसका एक-एक काम मनोहारी प्रतीत हुआ।	

.....